अध्याय 3

हामान के कारण यहूदियों को संहार का सामना करना पड़ा

अध्याय 3 में, शेष पुस्तक के वृत्तान्त का कथानक रूप लेना आरंभ करता है। राजा ने हामान को उच्च पद पर आसीन कर दिया। जब हामान को पता चला कि मौर्दकै उसे कोई आदर नहीं दे रहा है और मौर्दकै एक यहूदी है, तो उसने सभी यहूदियों का विनाश करना ठान लिया। राजा के बारहवें वर्ष के पहले महीने में, संहार की तिथि का निर्धारण "चिट्ठी" (פּוּר, *पूर*), के द्वारा किया, हामान ने राजा क्षयर्ष से एक राजाज्ञा निकालने की अनुमति प्राप्त की: उस वर्ष "बारहवें महीने के तेरहवें दिन को" सभी यहूदियों को घात किया जाना था। शेष पुस्तक प्रगट करती है कि इस विनाश से यहूदी कैसे बचाए गए।

हामान की पदोन्नति (3:1)

[1]इन बातों के बाद राजा क्षयर्ष ने अगागी हम्मदाता के पुत्र हामान को उच्च पद दिया, और उसको महत्व देकर उसके लिये उसके साथी हाकिमों के सिंहासनों से ऊँचा सिंहासन ठहराया।

वृत्तान्त को आगे बढ़ाने से पहले लेखक ने प्रगट किया कि हामान राजा का प्रधानमंत्री कैसे बना।

आयत 1. इन बातों के बाद, जैसे कि "इन बातों के बाद" (2:1), एक अनिश्चित समय अवधि को दिखाता है। इस अध्याय में दी गई और इसके बाद की घटनाएँ अध्याय 2 की घटनाओं के कई वर्ष बाद घटित हुई होंगी। एस्तेर राजा क्षयर्ष के सातवें वर्ष में रानी बनी, लगभग 479 ई.पू. (2:16, 17), और यहूदियों के संहार की राजाज्ञा राजा के बारहवें वर्ष में, लगभग पाँच वर्ष के पश्चात 474 ई.पू. (3:7) में दी गई।

इस संदर्भ में कहानी का आरंभ एक अपेक्षाकृत नगण्य घटना से हुआ: राजा के एक सेवक, **हामान**, की प्रधानमंत्री के पद पर पदोन्नति। इस पदोन्नति से **उसके साथी हाकिमों के सिंहासनों से ऊँचा सिंहासन ठहरा**। वाक्यांश "अधिकार स्थापित किया" का शब्दार्थ है "सिंहासन ठहराया।"

हामान की पहचान **अगागी हम्मदाता के पुत्र** कहकर हुई है, जो अन्यथा अज्ञात है। इस पहचान के कारण यह धारणा बनी है कि हामान अमालेकी राजा

अगाग, जिसे राजा शाऊल ने जब परमेश्वर ने उसे सभी अमालेकियों को मारने के लिए कहा था (1 शमूएल 15:1-35), मारा नहीं था, का वंशज था।[1] यदि हामान अगाग का वंशज था, उस राजा का जिसके कारण एक रीति से शाऊल को अपना राज्य छोड़ना पड़ा था, तो उसके और मौर्दकै के मध्य का यह संघर्ष इस ऐतिहासिक घटना से उत्पन्न हुआ होगा। यह और भी संभावित हो जाता है यदि मौर्दकै शाऊल से संबंधित था (2:5; 1 शमूएल 9:1, 2)।[2]

एक अन्य विचार है कि "अगागी" यह कहने के लिए प्रयोग नहीं किया गया था कि हामान वास्तव में अगाग का वंशज था, वरन पाठकों को स्मरण दिलवाने के लिए कि अमालेकियों और यहूदियों में शत्रुता सदा ही रहती आई थी। कैरेन एच. जोब्स ने यह विचार व्यक्त किया: "*अगागी* कहलाने के लिए यह आवश्यक नहीं है कि हामान अमालेकियों के वंश से ही आया हो। इस शब्द के प्रयोग के द्वारा लेखक उसे यहूदी-विरोधी जता रहा है, यहूदियों का एक शत्रु।" उन्होंने आगे कहा, "मूल पाठक इस एक संकेत से समझ गए होंगे कि यह इस्राएल और उसको नाश करने की शक्तियों के मध्य होने वाले प्राचीन संघर्ष का एक और प्रकरण है।"[3]

औरों का विचार है कि "अगागी" शब्द का ऐतिहासिक अगाग से कोई संबंध नहीं है, वरन यह फारस के किसी शहर या प्रांत से संबद्ध है।[4] वास्तविक परिस्थितियाँ जो भी हों, हामान परमेश्वर के लोगों का वैसे ही शत्रु था, जैसे अगाग हुआ करता था।

मौर्दकै का हामान को आदर देना अस्वीकार करना (3:2-6)

[2]राजा के सब कर्मचारी जो राजभवन के फाटक में रहा करते थे, वे हामान के सामने झुककर दण्डवत् किया करते थे क्योंकि राजा ने उसके विषय ऐसी ही आज्ञा दी थी; परन्तु मोर्दकै न तो झुकता था और न उसको दण्डवत् करता था। [3]तब राजा के कर्मचारी जो राजभवन के फाटक में रहा करते थे, उन्होंने मोर्दकै से पूछा, "तू राजा की आज्ञा का क्यों उल्लंघन करता है?" [4]जब वे उससे प्रतिदिन ऐसा ही कहते रहे, और उसने उनकी एक न मानी, तब उन्होंने यह देखने की इच्छा से कि मोर्दकै की यह बात चलेगी कि नहीं, हामान को बता दिया; उसने उनको बता दिया था कि मैं यहूदी हूँ। [5]जब हामान ने देखा कि मोर्दकै नहीं झुकता, और न मुझ को दण्डवत् करता है, तब हामान बहुत ही क्रोधित हुआ। [6]उसने केवल मोर्दकै पर हाथ उठाना अपनी मर्यादा से कम जाना। क्योंकि उन्होंने हामान को यह बता दिया था कि मोर्दकै किस जाति का है, इसलिये हामान ने क्षयर्ष के साम्राज्य में रहनेवाले सारे यहूदियों को भी मोर्दकै की जाति जानकर, नष्ट कर डालने की युक्ति निकाली।

हामान की पदोन्नति ने स्वतः ही यहूदियों के लिए समस्या खड़ी नहीं की। फिर भी, एक यहूदी ने समस्या उत्पन्न की, हामान के अधिकार को स्वीकार करने से इनकार करने के द्वारा।

आयत 2. हामान के अधिकारी हो जाने का एक प्रभाव यह भी था कि यह अनिवार्य था कि **राजा के सब कर्मचारी** उसका आदर करें। संभवतः इसमें सरकारी अधिकारी, और राजा के घराने के सेवक भी सम्मिलित थे। जितने भी **राजभवन के फाटक में रहा करते थे** - महल का वह प्रवेश द्वार जहाँ आगंतुक आया करते थे और जहाँ पर अधिकांश आधिकारिक कार्य किया जाता था - वे हामान के सामने **झुककर दण्डवत्** करते थे। **झुककर दण्डवत्** (הָחָשָׁ, *शाकाह*) का शब्दार्थ है अपने आप को "सामने पसार देना" मानो जैसे उपासना के लिए हो। स्वयं **राजा ने उसके विषय ऐसी ही आज्ञा दी थी** कि लोग **हामान** के आगे दण्डवत करें।

परन्तु एक व्यक्ति: **मोर्दकै** यहूदी ने राजा की इस आज्ञा का पालन करने से इनकार किया। क्योंकि पाठक को मौर्दकै का परिचय 2:5-7 में एक यहूदी और एस्तेर रानी का रक्षक और चचेरा भाई कहकर दिया गया है, इसलिए लेखक ने इस संदर्भ में उसकी और अधिक पहचान देने की परवाह नहीं की। न ही मौर्दकै के "राजभवन के फाटक" में होने के स्पष्टीकरण की भी कोई आवश्यकता थी, क्योंकि वह इस स्थान पर जाकर एस्तेर का हाल-चाल पता किया करता था (देखें 2:11, 21)।

आयत 3. स्वयं हामान का तुरंत ही मौर्दकै की अनाज्ञाकारिता की ओर ध्यान नहीं गया, परन्तु **राजा के कर्मचारी जो राजभवन के फाटक में रहा करते थे** उनका गया। उन्होंने उससे पूछा कि वह **राजा की आज्ञा का क्यों उल्लंघन करता है**।

आयत 4. निःसंदेह, ये व्यक्ति प्रयास कर रहे थे कि मौर्दकै अपना व्यवहार बदल ले; वे उससे **प्रतिदिन** इस विषय पर कहते ही रहे। जब मौर्दकै ने उनकी बात नहीं मानी, तब उन्होंने उसकी अनाज्ञाकारिता **हामान** को बता दी, संभवतः यह पूछने के द्वारा कि मौर्दकै के दण्डवत न करने के बात **चलेगी कि नहीं**। यद्यपि लेखक ने उसके इस व्यवहार का कारण तो नहीं बताया है, यह प्रगट है कि इसका उसके यहूदी होने से संबंध था। लेख **उनको बता दिया था कि मैं यहूदी हूँ** को "मौर्दकै की बात" के साथ जोड़ता है।

यहूदी होना मौर्दकै को हामान को आदर देने से कैसे रोकता था? इस प्रश्न का कोई सहज उत्तर उपलब्ध नहीं है। मूसा की व्यवस्था मूर्ति के सामने दण्डवत करने को मना करती थी, परन्तु वह पृथ्वी के राजाओं के सामने दण्डवत करने से मना नहीं करती थी। पुराने नियम में इसके उदाहरण हैं जब परमेश्वर के लोगों ने शासकों और अन्य अधिकारियों के सामने दण्डवत की (उत्पत्ति 23:7; 27:29; 1 शमूएल 24:8; 2 शमूएल 14:4; 1 राजा. 1:16)।[5]

यह सुझाया गया है कि यहूदियों और अमालेकियों के मध्य चली आ रही शत्रुता ही मौर्दकै की अनाज्ञाकारिता का कारण थी; दूसरे शब्दों में, वह एक प्राचीन शत्रु को आदर देना नहीं चाहता था। एक अन्य संभावना है कि मौर्दकै को लगता था कि हामान अपने आप को देवता दर्शा रहा है, और इसलिए उसने मौर्दकै के सामने दण्डवत करने को पराए देवता के सामने झुकाने के तुल्य समझा।[6]

व्याख्याकर्ताओं में यह विश्वास भी आम है कि मौर्दकै उस महिमा को जो केवल

परमेश्वर के लिए है, उसे मात्र एक मनुष्य, हामान, को देने से बचना चाहता था। वे मौर्दकै द्वारा दण्डवत करने से मना करने को अनुसरण करने के लिए एक उत्तम उदाहरण मानते हैं। किन्तु हो सकता है कि, मौर्दकै ने हामान के सामने दण्डवत करने से इसलिए मना करना क्योंकि यह मूर्तिपूजा के समान होता, गलत होता। हो सकता है कि मौर्दकै का व्यवहार केवल वही प्रगट कर रहा हो जो उसका विवेक उसे करने के लिए कह रहा था। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि वाचक ने, कहानी का बयान करते समय, न तो मौर्दकै की भर्त्सना की और न ही प्रशंसा। वह केवल तथ्य बता रहा था।

आयत 5. जब **हामान** को मौर्दकै के अनादर के बारे में पता चला, तो वह बहुत ही **क्रोधित** हुआ। संभवतः, मनुष्य की प्रवृत्ति को जानते हुए, हम उसकी प्रतिक्रिया को समझ सकते हैं। किसी को भी अनादर का अनुभव अच्छा नहीं लगता है; वह, जिसे हाल ही में राज्य के सर्वोच्च पद पर नियुक्त किया गया था, हामान, घमण्ड से भरा हुआ हो सकता था और अपने से कम दर्जे के लोगों की उपेक्षा के प्रति विशेषकर संवेदनशील हो सकता था।

आयत 6. लेकिन, इसके बाद जो हुआ वह समझ से बाहर है; **हामान** द्वारा ऐसी प्रतिक्रिया की पाठक आशा नहीं कर सकते थे। उसकी गलती के लिए **उसने केवल मोर्दकै पर हाथ उठाना अपनी मर्यादा से कम जाना** (शब्दार्थ में "उसकी दृष्टि में तुच्छ ठहरा"); इसके स्थान पर उसने ठान लिया कि वह **साम्राज्य में रहनेवाले सारे यहूदियों को भी ... नष्ट कर** डालेगा! मौर्दकै उस संहार में अवश्य ही सम्मिलित किया जाएगा; लेकिन साथ ही ऐसे हज़ारों यहूदी भी होंगे जिन्होंने हामान के प्रति कोई अनादर नहीं दिखाया था!

जैसे लेखक ने मौर्दकै की प्रेरणा के विषय कुछ नहीं कहा, वह हामान की इस अनुचित योजना का कोई स्पष्टीकरण दिए बिना ही आगे बढ़ गया। निश्चय ही हामान मौर्दकै को दण्ड दे सकता था। उसने ऐसा नहीं करना क्यों चुना? क्या उसका यह मानना था कि उसके अनादर के अपराध का प्रायश्चित हज़ारों के वध द्वारा ही हो सकता था? हामान को असामाजिक, अहंकारी, झक्की मनुष्य कहा जा सकता है, या हम यह कह सकते हैं कि हामान में हमें अत्याधिक घमण्ड के विनाशकारी प्रभाव देखते हैं। माईकल वी. फॉक्स का यही विचार था: "हामान केवल घमण्ड और उससे उत्पन्न होने वाले बैर के द्वारा चल रहा था।"[7]

यहूदियों के विनाश के लिए हामान की योजना (3:7-11)

[7]राजा क्षयर्ष के बारहवें वर्ष के नीसान नामक पहले महीने में, हामान ने अदार नामक बारहवें महीने तक के एक एक दिन और एक एक महीने के लिये "पूर" अर्थात् चिट्ठी अपने सामने डलवाई। [8]तब हामान ने राजा क्षयर्ष से कहा, "तेरे राज्य के सब प्रान्तों में रहनेवाले देश देश के लोगों के मध्य में तितर-बितर और छिटकी हुई एक जाति है, जिसके नियम और सब लोगों के नियमों से भिन्न हैं; और वे राजा के कानून पर नहीं चलते, इसलिये उन्हें रहने देना राजा को

लाभदायक नहीं है। 9यदि राजा को स्वीकार हो तो उन्हें नष्ट करने की आज्ञा लिखी जाए, और मैं राजा के भण्डारियों के हाथ में राजभण्डार में पहुँचाने के लिये, दस हज़ार किक्कार चाँदी दूँगा।" 10तब राजा ने अपनी अँगूठी अपने हाथ से उतारकर, अगागी हम्मदाता के पुत्र हामान को, जो यहूदियों का बैरी था दे दी; 11और राजा ने हामान से कहा, "वह चाँदी तुझे दी गई है, और वे लोग भी, ताकि तू उनसे जैसा तेरा जी चाहे वैसा ही व्यवहार करे।"

आयत 7. यह निर्णय कर लेने के पश्चात कि क्या करना है - सभी यहूदियों का संहार - हामान का अगला कदम था यह निश्चित करना कि यह कब करना है। **हामान** ने अपनी योजना को कार्यान्वित करने के लिए सर्वोत्तम समय जानने के लिए **"पूर" अर्थात् चिट्ठी** अपने सामने डलवाई (देखें 9:24)। "चिट्ठी" (גּוֹרָל, *गोरल*) का उपयोग "निष्पक्ष और न्यायी निर्णय पर पहुँचने के लिए किया जाता था" (देखें 1 इतिहास 25:8; नहेम्य. 10:34; 11:1; भजन 22:18; नीति. 18:18), तथा परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए भी (नीति. 16:33)।[8] फारस में हामान के संबंध में, चिट्ठी डालना, उसके देवता(ओं) की इच्छा जानने की एक विधि थी। पूरीम भी यही उद्देश्य पूरा करता था जो आज एक जोड़ी पासा फेंक कर किया जा सकता है। पासा फेंकने या सिक्का उछालने के परिणाम संयोग की बात हैं, जो मनुष्य के नियंत्रण के बाहर हैं। किन्तु, प्राचीन संसार के लोग, पासा फेंकने के परिणाम को संयोग नहीं मानते थे; उनका मानना था कि पूर के परिणाम सदा ही उनके इष्टदेवों के द्वारा नियंत्रित होते थे। इस प्रकार से हामान अपने देवताओं से यहूदियों के विनाश का सबसे उपयुक्त समय पता कर रहा था।

प्रतीत होता है कि **नीसान नामक पहला महीना (**मार्च/अप्रैल), कम से कम बाबुल की धारणाओं में, "वर्ष का वह समय जब नियतियाँ निर्धारित की जाती थीं" था।[9] हामान की योजना को कार्यान्वित करने की तिथि निर्धारित करने के लिए इस समय पर चिट्ठी **डलवाई** गई । यहाँ NASB का सुझाव है कि **एक एक दिन और एक एक महीने के लिये** चिट्ठियाँ डलवाई गई जब तक कि सकारात्मक उत्तर नहीं मिल गया। किन्तु कई अनुवाद संकेत करते हैं कि चिट्ठियाँ एक ही बार में डाली गईं "दिन और महीना निर्धारित करने के लिए" (NIV; देखें NAB; NKJV; NJPSV; NJB; NRSV; NCV; TEV; NLT)। REB कहती है कि यह "दिन और महीने को बारी-बारी लेने" के द्वारा किया गया। जब चिट्ठियाँ डाली जा रही होंगी, हो सकता है कि हामान प्रश्न पूछता हो "यहूदियों को नाश करने के लिए क्या यही अच्छा दिन/महीना है?" हर बार या तो कोई उत्तर नहीं दिया गया होगा या नकारात्मक उत्तर दिया गया होगा, जब तक कि चिट्ठी से अन्ततः सकारात्मक उत्तर नहीं मिल गया। अन्ततः चिट्ठी **अदार नामक बारहवें महीने** (फरवरी/मार्च) पर पड़ी। यही बात "तेरहवें दिन" (देखें 3:13) के लिए भी हुई होगी, यद्यपि यह MT (देखें LXX) में नहीं मिलता है।

यहूदियों को मारने के लिए हामान ने ग्यारह महीने आगे की तिथि क्यों चुनी? क्यों उसने राजा से तुरंत की आज्ञा लेकर यहूदियों का संहार करना आरंभ नहीं कर

दिया? हो सकता है कि उसे लगा हो कि इस आक्रमण की योजना कई महीने पहले से बनानी आवश्यक थी, क्योंकि प्राचीन संसार में एक से दूसरे स्थान तक सन्देश पहुँचाने में समय लगता था। (वे आधुनिक मापदण्डों के अनुसार काफी धीमे थे)। चिट्ठियों का डाला जाना दिखाता है कि वह या तो वहमी था या अपने देवताओं का सच्चा विश्वासी था। संभवतः वह अपने कार्य पर अपने देवताओं की आशीष चाहता था और उसने सोचा होगा कि यह करने का सबसे उत्तम विधि है कि उसके शत्रुओं को मारने की तिथि भी वे ही चुनें।

आयत 8. यह बताने के पश्चात कि हामान कब यहूदियों का संहार करना चाहता था, लेखक ने समझाया कि वह अपने उद्देश्य की पूर्ति कैसे करता। राजा का प्रधानमंत्री होने के कारण, उसकी राजा क्षयर्ष के पास तुरंत पहुँच थी; इसलिए उसने राजा से अपनी योजना को कार्यान्वित करने की अनुमति माँगी। उसने दो विधियों से राजा को मनाने की सोची।

आरंभ में, **हामान** ने यहूदियों[10] को राजा के लिए खतरे के रूप में चित्रित किया। उसने **क्षयर्ष** को एक ऐसे लोगों के समूह के विषय बताया जो साम्राज्य की शान्ति और व्यवस्था के लिए गंभीर खतरा थे। उसने जो कहा वह उनके बारे में सत्य और असत्य का चतुराई से बनाया गया मिश्रण था।[11]

हामान ने कहा, **"तेरे राज्य के सब प्रान्तों में रहनेवाले देश देश के लोगों के मध्य में तितर-बितर और छिटकी हुई एक जाति है।"** यह कथन सही था; क्योंकि यह वाक्यांश 475 ई.पू. में यहूदियों की स्थिति का अच्छा चित्रण है।

उसने क्षयर्ष से कहा, **"जिसके नियम और सब लोगों के नियमों से भिन्न हैं।"** यह कथन भी सही था। यहूदी यह जानकार प्रसन्न हुए होंगे कि विधर्मी उनकी व्यवस्था, मूसा की व्यवस्था, को पहचानते थे कि वह अन्य सभी नियमों से भिन्न है। यहूदियों का व्यवस्था का पालन करना ध्यान देने योग्य था क्योंकि कुछ नियम - विशेषकर भोजन वस्तुओं और उपासना के नियम - यहूदियों को पूर्णतः उन समाजों का भाग नहीं बनने देते थे जिनमें वे निवास करते थे।

प्रधानमंत्री ने कहा, **"वे राजा के कानून पर नहीं चलते।"** यह आरोप झूठा था। हामान का यह कहना सही हो सकता था कि मौर्दकै ने राजा की एक आज्ञा का उल्लंघन किया था, परन्तु उसके लिए यह निष्कर्ष निकालना अनुचित तथा तर्कहीन था कि सामान्यतः यहूदी उन नियमों का पालन नहीं करते थे जिनके अन्तर्गत वे रहते थे (देखिए यिर्म. 29:7)। एस्तेर का लिखा जाना, कुछ सीमा तक, इस आरोप का खंडन करने के लिए था। निःसंदेह हामान अपने आरोप की सत्यता के लिए चिन्तित नहीं था; जो वह करना चाहता था, यह आरोप, उसका समर्थन करता।

हामान ने एक चौथी टिप्पणी के साथ समाप्त किया: **"इसलिये उन्हें रहने देना राजा को लाभदायक नहीं है।"** वह फिर से झूठ कह रहा था। जैसा 2:19-23 में स्वयं मौर्दकै के कार्यों ने प्रमाणित किया, यहूदियों के होने से राजा लाभान्वित होता था।

आयत 9. अपनी बात को कहने के पश्चात, अपनी योजना के दूसरे भाग में,

हामान ने यह अभिप्राय दिया कि यहूदियों के संहार से **राजा** को बहुत धन मिलने का अवसर मिलेगा। उसने कहा, **"उन्हें नष्ट करने की आज्ञा लिखी जाए** (शब्दार्थ, 'लिखा जाए')।**"** फिर उसने राजा से प्रतिज्ञा की, कि यदि वह आज्ञा देगा, तो उसे **दस हज़ार किक्कार चाँदी दूँगा** (एक विशाल राशि, "फारस की केन्द्रीय सरकार के सालाना आय-व्यय का दो-तिहाई"[12])। यद्यपि लेख यह स्पष्ट नहीं करता है, हामान द्वारा चाँदी देने की प्रतिज्ञा संभवतः स्वयं उसके खज़ाने से नहीं आने वाली थी। वरन, जब यहूदियों पर आक्रमण करके उन को मारा जाता, तो उन से छीन ली जाती। फिर भी यह विशाल राशि संकेत करती है कि वह धनी व्यक्ति था (देखें 5:11); "उसका यह प्रस्ताव हास्यास्पद होता यदि यह धन उसे उपलब्ध नहीं होता।"[13] यह धन उन लोगों के द्वारा उठाया जाता जो यह खूनी कार्य करते और वे अन्ततः उसे **राजभण्डार** में पहुँचा देते।

इस प्रस्ताव से दो तथ्य प्रगट हैं। (1) जिन यहूदियों पर आक्रमण किया जाना था उनमें से कुछ धनवान थे। उनका धनाड्य होना विदित होगा; अन्यथा, हामान इतने भरोसे के साथ इस घूस को देने का प्रस्ताव नहीं करता। (2) हामान इस बात से अवगत था कि राजा पर चाँदी देने के प्रस्ताव द्वारा प्रभाव डाला जा सकता है। इस लेन-देन में दोनों में से किसी भी मनुष्य के उद्देश्य विशुद्ध नहीं थे। हामान घमण्ड, घृणा, और प्रतिशोध से प्रेरित था; परन्तु उसने राजा को यह भरोसा दिलवाना चाहा कि वह साम्राज्य की भलाई के विषय सोच रहा था। राजा ने चाहा होगा कि लोग यही समझें कि वह अपने राज्य में व्यवस्था बनाए रखना चाहता था, परन्तु वास्तविकता में वह केवल उस धन के बारे में सोच रहा था जो वह अर्जित कर सकता था - और हामान यह जानता था!

आयत 10. "दस हज़ार किक्कार चाँदी" सुनने के बाद **राजा** आश्वस्त हो गया। उसने **अपनी अँगूठी अपने हाथ से उतारकर**, जो उसके अधिकार का प्रतीक थी, **हामान को दे दी**। अँगूठी हाथ में आ जाने के बाद, राजा द्वारा दिए गए अधिकार के अन्तर्गत, हामान जो चाहता था वह कर सकता था। c ने कहा, "अँगूठी राजकीय अधिकार का चिन्ह थी और पुरातन काल में उसा प्रयोग आधिकारिक दस्तावेजों पर मुहर लगाने के लिए हस्ताक्षर के स्थान पर किया जाता था।"[14] उन्हीं शब्दों का प्रयोग करते हुए जैसे कि 3:1 में हैं, लेखक ने फिर से हामान के लिए **अगागी हम्मदाता के पुत्र** प्रयोग किया; परन्तु इस बार साथ में **यहूदियों का बैरी** भी जोड़ दिया।

आयत 11. राजा ने **हामान** से कहा कि वह धन को अपने पास रख ले। संभवतः वह इस प्रस्ताव को मना करने के समय निष्ठावान नहीं था। वरन, वह एक सांस्कृतिक सौदेबाज़ी की विधि को अपना रहा था। उसने कहा, **"वह चाँदी तुझे दी गई है"** (शब्दार्थ, "चाँदी तुझे दी गई है"),[15] परन्तु उसके बोलने के लहजे ने हामान को बता दिया होगा कि चाँदी को उसके राजभंडार में डाल दिए जाने वह प्रसन्न होता।[16] कैरी ए. मूर का विचार था कि "राजा ने धन को स्वीकार किया, संभवतः हामान के साथ सौदेबाज़ी करते हुए जो अब्राहम द्वारा मकपेला की भूमि के लिए एप्रोन के साथ की गई सौदेबाज़ी का स्मरण करवाता है [उत्पत्ति 23:7-

18]।"[17]

राजा ने यह भी कहा कि हामान **लोगों** (यहूदियों) के साथ अपनी इच्छानुसार व्यवहार कर सकता है। हामान अपने उद्देश्य में सफल रहा था। राजा से मिले अधिकार के द्वारा वह सारे साम्राज्य में यहूदियों का नाश करवा सकता था।

हामान की घोषणा (3:12-15)

[12]यों उसी पहले महीने के तेरहवें दिन को राजा के लेखक बुलाए गए, और हामान की आज्ञा के अनुसार राजा के सब अधिपतियों, और सब प्रान्तों के प्रधानों, और देश देश के लोगों के हाकिमों के लिये चिट्ठियाँ, एक एक प्रान्त के अक्षरों में, और एक एक देश के लोगों की भाषा में राजा क्षयर्ष के नाम से लिखी गईं; और उनमें राजा की अँगूठी की छाप लगाई गई। [13]राज्य के सब प्रान्तों में इस आशय की चिट्ठियाँ हरकारों के द्वारा भेजी गईं कि एक ही दिन में, अर्थात् अदार नामक बारहवें महीने के तेरहवें दिन को, क्या जवान, क्या बूढ़ा, क्या स्त्री, क्या बालक, सब यहूदी मार डाले जाएँ, नष्ट किए जाएँ और उनका सत्यानाश किया जाए; और उनकी धन सम्पत्ति लूट ली जाए। [14]उस आज्ञा के लेख की नकलें सब प्रान्तों में खुली हुई भेजी गईं कि सब देशों के लोग उस दिन के लिये तैयार हो जाएँ। [15]यह आज्ञा शूशन गढ़ में दी गई, और हरकारे राजा की आज्ञा से तुरन्त निकल गए। राजा और हामान तो दाखमधु पीने बैठ गए, परन्तु शूशन नगर में घबराहट फैल गई।

इस अध्याय का अन्त यह बताने के साथ होता है कि कैसे राजा की आज्ञा को प्रकाशित किया गया और सारे राज्य में भेजा गया।

आयत 12. पहले महीने के तेरहवें दिन को [नीसान, या मार्च/अप्रैल] **राजा के लेखक बुलाए गए** राजाज्ञा को लिखित करने के लिए। यह हामान द्वारा यहूदियों के संहार के लिए निर्धारित तिथि (3:13) से ग्यारह महीने पूर्व हुआ।

राजाज्ञा द्वारा साम्राज्य के सभी अधिकारियों को संबोधित किया गया, सबसे बड़े (**राजा के सब अधिपतियों**) से लेकर सबसे छोटों तक (**प्रान्तों के प्रधानों**, हाकिम)। इस राजाज्ञा के विषय दो तथ्यों पर बल दिया गया है। (1) इसे सारे साम्राज्य में भेजा गया (**एक एक प्रान्त के अक्षरों में, और एक एक देश के लोगों की भाषा में**)। (2) यद्यपि यह हामान द्वारा लिखी गई, इसे राजा के **नाम** से प्रकाशित किया गया और इसपर **राजा की अँगूठी की छाप लगाई गई**। इसमें अपरिवर्तनीय राजाज्ञा का बल था।

आयत 13. राजाज्ञा **राज्य के सब प्रान्तों में हरकारों के द्वारा भेजी गई**। यह फारस के साम्राज्य में एक कुशल डाक व्यवस्था का सूचक है जो उससे सहमत है जिसका 1:22 में उल्लेख आया है, और इसी प्रणाली का उल्लेख फिर से 8:10, 14 में भी आया है।

इसके बाद राजाज्ञा का विषय और उसके प्रकाशन विवरण दिया गया है। इस

नए नियम में कहा गया था कि **अदार** [या फरवरी/मार्च] **नामक बारहवें महीने के तेरहवें दिन को, क्या जवान, क्या बूढ़ा, क्या स्त्री, क्या बालक -** सब यहूदी मार डाले जाएँ। राजाज्ञा में उस संहार के लिए जिसकी अनुमति दी जा रही थी, तीन शब्द सम्मिलित थे: यहूदियों के शत्रुओं को, उन्हें **मार** डालने, **नष्ट** करने, और उनका **सत्यानाश** करने की अनुमति होगी। इस समाचार से गहराई से प्रभावित होकर, एस्तेर बाद में अपने पति से विनती करेगी: "क्योंकि मैं और मेरी जाति के लोग बेच डाले गए हैं, और हम सब घात और नाश किए जाने वाले हैं" (7:4)। इसके अतिरिक्त यहूदियों को लूटा जाना था; जो उन्हें मारते वे **उनकी धन सम्पत्ति लूट** सकते थे। धन-संपत्ति प्राप्त करने की यह प्रक्रिया इसे आकर्षक प्रस्ताव बनाती थी।

आयत 14. आज्ञा यह निर्धारित नहीं करती थी कि इस संहार के लिए कौन उत्तरदायी होगा। क्योंकि लेखक ने कहा कि आज्ञा **सब प्रान्तों में ... सब देशों के लोगों** के लिए थी, प्रत्यक्ष है कि यहूदियों को मार डालने का निमंत्रण सभी को दिया जा रहा था। अध्याय 9 की घटनाओं के संदर्भ में, पाठक यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि यहूदियों के शत्रुओं द्वारा यह निमंत्रण स्वीकार कर लिया गया था।

सारे साम्राज्य में यहूदियों और उनके शत्रुओं ने आने वाले निर्णायक दिन, अदार की तेरहवें दिन, जिसे चिट्ठियाँ डालने के द्वारा निर्धारित किया गया था, के लिए तैयारियाँ कीं।

आयत 15. लेखक ने साम्राज्य की दूरस्त सीमाओं से ध्यान फिर से राजधानी **शूशन** पर किया। वहाँ भी, **आज्ञा दी गई**, जिससे **नगर में घबराहट फैल गई**। इस "घबराहट" का कारण अच्छे नागरिक समझे जाने वाले प्रमुख यहूदी रहे होंगे। शूशन के शेष लोगों ने अचरज किया होगा कि, "ऐसी आज्ञा क्यों निकाली गई?"

इस वृत्तान्त की समाप्ति एक व्यंग्यात्मक टिप्पणी के साथ होती है। जबकि शेष नगर में घबराहट थी, **राजा और हामान** शान्ति से आनंद मना रहे थे, राजमहल में दाखमधु पी रहे थे। इस पल में उनकी मित्रता उसकी तीखी तुलना में है जो इस कहानी के अन्त के समय उनके मध्य होने जा रहा था।

अनुप्रयोग

परमेश्वर की विधि (अध्याय 3)

एस्तेर की पुस्तक में यहूदियों का संहार तय था। किसी रहस्यमय कथानक वाले उपन्यास या नाटक की भाषा का प्रयोग करते हुए, कोई यह पूछ सकता है, "यह किसने किया?" उन्हें विनाश की कगार पर लाने के लिए उत्तरदायी कौन था? इस प्रश्न का कई विधियों से उत्तर दिया जा सकता है। निःसंदेह यह हामान ने किया था: वही उत्तरदायी था, क्योंकि वही थी जो मौर्दकै द्वारा दिखाए गए अनादर से इतना क्रुद्ध था कि उसने षड्यंत्र रचा कि मौर्दकै के सभी लोगों, यहूदियों, का संहार किया जाए।

इसके अतिरिक्त, क्षयर्ष ने किया, यद्यपि वह नहीं चाहता था कि उसे दोषी

गिना जाए। उसने अपने आप को छलावे में आने दिया; एक बार हामान के हाथ में अंगूठी आई तो उसके पास जो वह चाहता लोगों के साथ वैसा करने का अधिकार था। राजा को इतना भोला नहीं होना चाहिए था; वह हामान पर विश्वास करने के स्थान पर, परिस्थिति की जाँच करवा सकता था और सत्य को जान सकता था।

इसके अतिरिक्त, राजा के सेवकों ने यह किया। हामान ने मौर्दकै की उदण्डता पर ध्यान भी नहीं किया था, जब तक कि वे इसे उसके ध्यान में लेकर नहीं आए। वास्तव में इस बात से उनका कुछ लेना-देना नहीं था। यदि वे चुगली नहीं लगाते, मौर्दकै पर हामान का ध्यान नहीं जाता और यहूदियों पर संभवतः कोई खतरा नहीं आता।

एक प्रकार से स्वयं मौर्दकै ने यह किया। वह हामान के प्रति आदर के साथ व्यवहार कर सकता था, परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन किए बिना। एक प्रकार से वह स्वयं अपनी (तथा लोगों की) विपत्ति के लिए उत्तरदायी था।

हम क्या निष्कर्ष निकालें कि इस घटनाक्रम के लिए कौन उत्तरदायी था? उत्तर है "उपरोक्त सभी!" परमेश्वर की विधि में, इन सभी भिन्न तत्वों ने मिलकर परमेश्वर द्वारा इच्छित परिणाम प्रदान किया।

पाठक को मिस्र में यूसुफ के बारे में स्मरण करना चाहिए। यूसुफ, एक भूतपूर्व दास, मिस्र का प्रधानमंत्री बना; फिर याकूब और उसका परिवार मिस्र में आकर बस गए। याकूब के देहांत के बाद, यूसुफ के भाइयों को भय था कि वह उनसे बदला लेगा। यूसुफ ने कहा, "यूसुफ ने उन से कहा, मत डरो, क्या मैं परमेश्वर की जगह पर हूँ? यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिये बुराई का विचार किया था; परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया, जिस से वह ऐसा करे, जैसा आज के दिन प्रगट है, कि बहुत से लोगों के प्राण बचे हैं" (उत्पत्ति 50:19, 20)। उस पर विचार करना कि उस परिणाम को लाने के लिए क्या कुछ किया गया आश्चर्यजनक है: एक पिता का खेदजनक पक्षपाती होना, यूसुफ का मूर्खता में अपने स्वप्न के बारे में डींग मारना, भाइयों की शत्रुता और यूसुफ को दासत्व में बेच देने का पाप, पोतीपर की पत्नी की वासना और झूठ, स्वप्नों के अर्थ का बताया जाना और पूरा होना, पिलानेहारे का भूल जाना, "प्राकृतिक" संपन्नता (सात वर्ष तक बहुतायत की फसल) और "प्राकृतिक" आपदा (सात वर्ष का अकाल), और स्वयं यूसुफ की परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता। परमेश्वर की विधि में इन सभी तत्वों के मिलने से यहूदी मिस्र में लाए गए और उनके छुटकारे के लिए मार्ग बना और वे परमेश्वर के चुने हुए लोग हुए। यह सब किसने किया? परमेश्वर ने! यूसुफ के विषय, इन सब बातों ने मिलकर "भलाई" उत्पन्न की (देखें रोमियों 8:28)।

मौर्दकै तथा एस्तेर के विषय हम फिर भी विस्मित हो सकते हैं: यदि परमेश्वर यहूदियों को बचाना चाहता था, तो उसने इन सब परेशानी वाली घटनाओं को होने से रोक क्यों नहीं दिया? हम परमेश्वर की मनसा को नहीं जानते हैं, इसलिए निश्चितता के साथ उत्तर नहीं दे सकते हैं। संभवतः, परमेश्वर केवल यही नहीं चाहता था कि यहूदी संहार से बचें। वह उन्हें और भी उन्नत होते हुए देखना चाहता था। वास्तव में एस्तेर में सुनाई गई कहानी का परिणाम यही था। न केवल यहूदी

विनाश से बचे, परन्तु वे पहले से भी अच्छी स्थिति में हो गए! संभवतः यही उत्तर है कि परमेश्वर ने ऐसा क्यों होने दिया।

हामान का पापमय होना (अध्याय 3)

हामान पापी होने और उसके परिणामों का एक उदाहरण प्रदान करता है।

घमण्ड और उसका परिणाम। हामान के घमण्ड ने उसे उकसाया कि वह यहूदियों के विनाश के लिए योजना बनाए, परन्तु अन्ततः इससे उसका ही नाश हुआ। घमण्ड (या अभिमान) सदा ही पापमय रहा है; नीतिवचन 6:16, 17 में, जहाँ वे सात पाप दिए गए हैं जिनसे "परमेश्वर घृणा करता है" उनमें से पहला पाप यही है (देखें रोमियों 1:30; 12:3; 1 कुरि. 13:4; याकूब 4:6)। हम पढ़ते हैं, "सब मन के घमण्डियों से यहोवा घृणा करता है; मैं दृढ़ता से कहता हूं, ऐसे लोग निर्दोष न ठहरेंगे" (नीति3 16:5)। घमण्ड के परिणाम हानिकारक हैं। जो ऐसा व्यवहार प्रदर्शित करते हैं उन्हें अनादर और नाश मिलेगा (नीति. 11:2; 16:18)।

अत्याधिक आवेश के दुखदायी परिणाम। मौर्दकै की अनाज्ञाकारिता के प्रति हामान की प्रतिक्रिया उस समझे जाने वाले अपमान से कहीं अधिक बढ़कर थी। हमें यह बचकाना लगता है कि हामान ने संपूर्ण जाति का विनाश करना इसलिए ठान लिया क्योंकि एक व्यक्ति ने उसकी ताकत को स्वीकार करने से मना कर दिया था। अन्त में, एक व्यक्ति के अनादर के प्रति उसकी मूर्खतापूर्ण प्रतिक्रिया के कारण स्वयं उसे फांसी पर चढ़ा दिया गया।

बुराई को बढ़ाने के लिए चतुराई। हामान द्वारा राजा से किए गए निवेदन की चतुराई को कोई मना नहीं कर सकता है। उसका व्याख्यान प्रभावी था; राजा उससे सहमत हुआ। किन्तु, वह बुरे उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कहे गए झूठ से भरा व्याख्यान था। इस घटना से हमें शैतान के शिष्यों की चतुराई के प्रति सचेत रहने को स्मरण रखना चाहिए। बुरे व्यक्ति झूठ बोला सकते हैं, उन्हें सत्य के जैसा प्रगट कर सकते हैं, तथा औरों को बुरा करने के लिए सहमत कर सकते हैं। क्योंकि वक्ता चतुर है, इसलिए इस तथ्य के कारण यह नहीं मान लेना चाहिए कि उसका उद्देश्य सही है या हमें जो वह कह रहा है उसे करना ही चाहिए। कोई व्यक्ति सहमति बनाना वाला हो सकता है, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि निश्चय ही वह सही है। चाहे कोई प्रचारक प्रेरित करना वाला ही क्यों न हो, फिर भी हमें बाइबल में दी गई शिक्षाओं के साथ उसकी शिक्षाओं का आंकलन करना चाहिए। हमें अपने आप को गलत शिक्षाओं से बचाए रखने के लिए पवित्रशास्त्र को पढ़ना चाहिए (प्रेरितों 17:11; देखें गला. 1:8, 9)।

मसीहियों की तुलना में यहूदी (3:8)

यहूदी लोगों का 3:8 में दिया गया विवरण आज के मसीही लोगों पर लागू किया जा सकता है।

प्रथम, हामान ने यहूदियों के लिए कहा "तेरे राज्य के सब प्रान्तों में रहने वाले देश देश के लोगों के मध्य में तितर-बितर और छिटकी हुई एक जाति है।" वे बाबुल

की बंधुवाई (586 ई.पू.) के कारण तितर-बितर हुए थे। फारस के साम्राज्य के समय में, वे "जिस जिस प्रान्त, और जिस जिस नगर में" (8:17) विद्यमान थे।

इसी प्रकार से, मसीही सारे संसार में फैले हुए हैं। यद्यपि अभी भी ऐसे स्थान हैं जहाँ सुसमाचार प्रचार नहीं हुआ है, या व्यापक रीति से स्वीकार्य नहीं है, परन्तु परमेश्वर के लोगों की मंडलियां सारे संसार भर में स्थापित की गई हैं। निःसंदेह, महान आज्ञा निर्देश देती है कि मसीह में उद्धार का सन्देश "सब जातियों" के साथ साझा किया जाए (मत्ती 28:19)।

दूसरे, हामान ने यहूदियों के लिए कहा, "जिनके नियम और सब लोगों के नियमों से भिन्न हैं।" परमेश्वर ने इस्राएल को विशिष्ट उद्देश्य के लिए अपने विशेष लोग होने के लिए चुना था: कि वे अपने चारों ओर के देशों के लिए ज्योति हों (निर्गमन 19:5; व्यव. 14:2; 26:16-19; यशा. 42:6; 49:6)। यद्यपि बाबुल के लोगों द्वारा यहूदियों को उनकी मूल भूमि से निकालकर तितर-बितर कर दिया गया था, उन्होंने अपनी विशिष्ट पहचान को खोया नहीं था। उनके अन्य समूहों से भिन्न होने का कारण था कि परमेश्वर ने सीनै पर्वत पर उन्हें अपनी व्यवस्था दी थी (निर्गमन 20:1-23:33)। यह तथ्य कि यहूदी सब्त के दिन विश्राम करते थे और यह कि वे मूर्तियों की उपासना नहीं करते थे उन कई बातों में से थे जो उन्हें अन्य सभी से पृथक करती थीं।

इसी प्रकार से परमेश्वर द्वारा मसीहियों को पृथक किया गया है, नई वाचा के द्वारा, कि वे उसके विशेष लोग हों। पतरस ने एशिया माईनर में तित्तर-बित्तर हुए मसीहियों को ये शब्द लिखे: "पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और [परमेश्वर की] निज प्रजा हो, इसलिये कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो।" (1 पतरस 2:9)। उसने इस विवरण से आगे कहा कि उनके पवित्र जीवन और भले कार्य उन विधर्मियों पर बड़ा प्रभाव डालेंगे जिनके मध्य वे रहते थे (1 पतरस 2:11, 12)।

समाप्ति नोट्स

[1]जोसेफस ने हामान की अमालेकी होने की पहचान की। (जोसेफस *एंटीक्विटीस* 11.6.5.) अमालेकी इस्राएलियों के सदा के शत्रु थे। (देखें निर्गमन 17:8-16; गिनती 14:40-45; व्यव. 25:17-19; न्यायियों 3:13; 6:3, 33; 2 शमूएल 1:1-16.) [2]डेविड जे. ए. क्लाईन्स, "एस्तेर," में *हारपर्स बाइबल कॉमेन्ट्री*, एड. जेम्स एल. मेय्स (सैन फ्रांसिस्को: हार्पर & रो, 1988), 389. [3]कैरेन एच. जोब्स, *एस्तेर*, द NIV एप्लिकेशन कॉमेंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ॉनडरवैन, 1999), 120-21. [4]एफ. बी ह्यूइ, जूनियर, "एस्तेर," में *द एक्सपोज़िटर्स बाइबल कॉमेन्ट्री*, वोल. 4, *1 राजा-अय्यूब*, एड. फ्रैंक ई. गैबेलिएन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ॉनडरवैन पबलिशिंग हाउस, 1988), 812. [5]यद्यपि व्यवस्था यहूदियों के लिए पृथ्वी के शासकों के सामने दण्डवत करना वर्जित नहीं करती थी, वह उनके आज्ञाकारी होने के लिए बाध्य भी नहीं करती थी (जैसे कि नया नियम करता है)। [6]LXX में एस्तेर में एपोक्रेफा से जोड़ी गई बातों के अनुसार, मोर्दकै ने कहा, "मैंने यह इसलिए किया जिससे मैं मनुष्य की महिमा को परमेश्वर की महिमा से ऊपर न करूँ, और मैं आपके

अतिरिक्त किसे अन्य के सामने कदापि नहीं झुकूँगा, आप जो मेरे प्रभु हैं" (एडीशंस 13:14)। रब्बियों द्वारा दी गई एक व्याख्या कहती है कि मोर्दकै मूर्तिपूजा से बच रहा था। मिद्राश कहता है कि हामान ने "अपने वस्त्र में छाती पर कढ़ाई की हुई एक मूर्ति को लगा रखा था, और जो भी हामान के सामने झुकता था वह उस मूर्ति के सामने झुकता था" (*एस्तेर रब्बाह* 7.5)। [7]माइकिल वी. फॉक्स, *कैरैक्टर एण्ड आईडीयौलोजी इन द बुक ऑफ एस्तेर*, 2ड एड. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 2001), 179. [8]क्लेटन विंटर्स, *कॉमेन्ट्री ऑन एज्रा-नहेम्याह-एस्तेर* (एबीलीन, टेक्सस: क्वालिटी पब्लिकेशंस, 1991), 176. [9]डी. जे. ए. क्लाईन्स, *एज्रा, नहेम्याह, एस्तेर*, द न्यू सेंच्युरी बाइबल कॉमेन्ट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1984), 295. [10]लेख में जहाँ तक मिलता है, उसने अनाज्ञाकारी लोगों की यहूदी कहकर पहचान नहीं की।

[11]जॉयस जी. बॉल्डविन, *एस्तेर*, द टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेंट कॉमेन्ट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इन्टर-वर्सिटी प्रैस, 1984), 74. [12]क्लाईन्स, "एस्तेर," 391. सोने और चाँदी को मिलाकर, फारसी कर के रूप में सालाना पन्द्रह हज़ार टैलेंट से कम लेते थे। (हेरोडोटस *हिस्ट्रीस* 3.95.) [13]बॉल्डविन, 74. [14]ह्यूइ, 813. [15]अन्य अनुवाद, LXX का अनुसरण करते हुए, अनुवाद करते हैं, "धन को रखे रहो" (NIV; NJB; REB). [16]इस व्याख्या के विरुद्ध यह तथ्य है कि क्षयर्ष ने एक अन्य अवसर पर इससे भी बड़ी राशि को मना कर दिया था। (हेरोडोटस *हिस्ट्रीस* 7.27-29.) [17]कैरी ऐ. मूर, *एस्तेर*, द ऐंकर बाइबल, वोल. 7बी (न्यू यॉर्क: डबलडे & कम्पनी, 1971), 40.